ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष के विविध आयाम

Various Dimensions of Female Struggle in Shivani's Novels

Paper Submission: 16/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

त्रिवेणी
शोध छात्र
हिन्दी विभाग,
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर, म0प्र0, भारत

साधना दीक्षित
प्रध्यापक
हिन्दी विभाग,
शा0 पी0जी0 कालेज,
मुरैना, म0प्र0, भारत

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण है जो समाज के यथार्थ स्वरूप को साहित्य में प्रस्तुत करने का साहस करता है। शिवानी का जन्म उस समय हुआ था जिस समय स्त्रियों को समाज में कोई स्थान नहीं मिला था। स्त्रियों को भोग–विलास को वस्तु समझी जाती थी। पुरूष सत्तात्मक समाज में स्त्रियों को कोई महत्व नहीं दिया जाता था। शिवानी ने अपने उपन्यासों में स्त्रियों को ऊपर उठाने का कार्य किया। उन्होंने स्त्रियों को नये पटल पर लाने की कोशिश की जहाँ तक हो सका उसमें काफी हद का सफलता भी प्राप्त की। विधवा स्त्री, अनमेल विवाह, वेश्यावृत्ति, दलित स्त्री सभी का हृदय परिवर्तन का उल्लेख किया है। निम्न वर्ग की स्त्री को उन्होंने अपने बच्चों का पालन–पोषण एक अच्छे तरीके करने का प्रयास किया और उसमें उनको सफल भी होना पड़ा।

Literature is the mirror of society which dares to present the true nature of society in literature. Shivani was born at a time when women had no place in society. Women were considered enjoyment and luxury. No importance was given to women in the male ruling society. Shivani did the work of raising women in her novels. They tried to bring women to the new table and achieved a lot of success as far as possible. Widow woman, unmarried marriage, prostitution, Dalit woman have all mentioned change of heart. She tried to raise her children in a good way, and she also had to succeed in them.

मुख्य शब्द : शिवानी, स्त्री–संघर्ष, अनमेल विवाह।
Shivani, Women-Struggle, Mismatched Marriage.

प्रस्तावना

गौरा पंत शिवानी के कथा साहित्य में यह हम बताना चाहते है कि इन्होंने अपने साहित्य में स्त्रियों को अधिक ध्यान दिया। उस पर शिवानी ने प्रकाश डाला है। स्त्रियों के प्रति इन्होंने साहित्य का विषय बनाया। इनके साहित्य में स्त्रियों को संघर्षशील और समाज में रहन–सहन का तौर–तरीके का सलीका सिखाया है। इन्होंने अपने साहित्य में स्त्रियों को उच्च स्थान दिलाने का कार्य किया। शिवानी के साहित्य का पढकर यह मालूम होता है कि स्त्रियों को कितना नीचा समझा जाता था।

उस समय के समाज के स्त्रियों का कोई स्थान नहीं दिया जाता था स्त्रियों को सिर्फ वस्तु के समान रखा जाता था और उनका भोग–विलास किया जाता था। स्त्रियों के पास कोई शक्ति नहीं होती थी। शिवानी के स्त्रियों को शक्ति प्रदान करने का प्रयास किया उनके दुख–दर्दों को समाज में उजागर करने की कोशिश की।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य शिवानी के उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष के विविध आयामों का अध्ययन करना है।

विषयवस्तु

शिवानी एक युगीन लेखिका है जिन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री–संघर्षों के विविध आयामों को बड़े ही मार्मिक और संवेदनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। साहित्य समाज का दर्पण है जो समाज के यथार्थ स्वरूप को साहित्य में प्रस्तुत करने का साहस करता है। शिवानी ने सामाजिक परिवेश में स्त्रियों की समस्याओं पर चिंतन, मनन किया है। आपने स्त्री–समस्याओं को प्रमुखता के

साथ प्रस्तुत किया है। आपका सृजन संसार नारी–समस्याएँ, अनमेल विवाह, पर्दा–प्रथा, वैवध्य जीवन, वेश्यावृत्ति, स्त्री–शोषण, अत्याचार और स्त्री–विवेचना से ओत–प्रोत है। स्त्री के संघर्षों के विभिन्न रूपों को आपने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से नवीन स्वरूप प्रदान किया है। आपके उपन्यासों के केन्द्रीय पात्र–स्त्रियाँ ही है।

सामाजिक रूप से देखा जाय तो स्त्री–पुरुष का सम्बंध सहजीवी के रूप में होता है। किन्तु स्त्री को पारिवारिक दायित्व सौपकर पुरुष अपने जीवन में स्वतंत्रवादी प्रवृत्ति को जन्म देता है और स्त्री को तुच्छ, निम्न प्राणी समझकर उसका शोषण करता है। शिवानी ऐसी पुरुषवादी प्रवृत्ति का प्रतिकार किया है और विपरीत परिस्थितियों में भी स्त्रियों के लिए जीवन–दर्शन का मार्ग प्रशस्त किया है। पूतोंवाली, रीतिविलाप, सुरंगमा, श्मशान, चंपा चौदह शिवानी के ऐसे उपन्यास है जो स्त्री संघर्षों को अभिव्यक्त करते है। शिवानी ने चित्रित किया कि स्त्री केवल भोग–विलास की वस्तु नहीं है उसमें जीवन का अनुराग होता है। स्त्री भी मानवीय संवेदनाओं के दुःख–दर्द को अनुभव करती है।

शिवानी ने अपने उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष को विविध ढंग से प्रस्तुत किया है। अवैध यौन सम्पर्क से उत्पन्न संतानों को लोग नाजायज कहकर दुत्कार देते है। 'कृष्णकली' उपन्यास में स्त्री के जीवन को इसी रूप में चित्रित किया गया है। पार्वती अपनी अवैध संतान को मार डालना चाहती थी किन्तु डॉ0 पैट्रीक के लिए यह संतान भगवान की देन है, वह कहती है कि– ''बच्चे में ईश्वर का अंश होता है, पार्वती! ईश्वर का गला घोटेगी तू।''[1] शिवानी का मतैक्य है कि स्त्री का संघर्ष स्त्री को चेतना जागृत करने से है। वर्ना प्रत्येक पाप का जिम्मेदार वह स्वयं को मान लेती है।

शिवानी ने 'किशुनकली' उपन्यास में नारी के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। समाज में नारी को सभी लोग लोलुपता की नजर से देखते है। यह हमारे समाज की विसंगति है, स्त्री को केवल मूर्ति के रूप में पूजा करते है यथार्थ में उसका अपमान और शोषण ही करते है। 'किशुनकली' के पेट में अवैध बच्चा है जिस पर समाज उँगुली उठाता है तब काखी चित्कार उठती है– ''जिस हरामजादे कमीने ने इस नाबालिक, असहाय, उन्मादग्रस्त छोकरी का सर्वनाश किया है उसे ढूँढ़कर पकड़कर लाए तुम्हारा समाज, तब मैं जानूँ। दोष किसी का और का दण्ड कोई और भोगे, कहाँ का न्याय है जी, किशुनली कहीं नहीं जायेगी। पॉलूगी उसकी संतान को भले ही तुम्हारी बिरादरी हमारा हुक्का–पानी बंद कर दे।''[2] किशुनली में नारी–संघर्षों और चेतना की एक नई दृष्टि देखने को मिलती है। एक पागल लड़की के साथ सहवास कर उसे और उसके पेट में पलने वाले बच्चे को छोड़ दिया गया। स्त्री निरीह प्राणी है किन्तु काखी ने समाज की इस प्रवृत्ति के विरुद्ध आवाज उठाई है और प्रतिज्ञा करती है कि वह किशुनली और उसके बच्चे को पालेगी। समाज स्त्री का अपराध देखता है जबकि इस अपराध में संलिप्त उस व्यक्ति का अपराध नहीं देखता जिसके पृष्ठभूमि में पुरुष छुपा हुआ है। शिवानी ने स्त्री–संघर्षों की नवीन गाथा का चित्रण किया है। स्त्री–जीवन के प्रति उनके मन में आत्मीयता और संवेदना का स्वर उभरता है।

शिवानी के प्रत्येक उपन्यास मायापुरी, कृष्णकली, कालिन्दी, पूतोवाली, चौदह फेरे आदि में स्त्री विभिन्न दुःख–दर्द को तराशा गया है। शिवानी ने स्त्रियों की विडम्बना, परिस्थिति तथा संयोग को बाखूबी अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। 'श्मशान चम्पा' एक ऐसा ही उपन्यास है जिसमें एक स्त्री अपने अतीत से दूर भागती है किन्तु उसकी बेटी उसी दलदल में फँसती नजर आती है। कमलेश्वरी अपनी व्यथा को व्यक्त करती है कि– ''जिस नरक से में भाग दूर चली गई थी वही अब मेरी बेटी पहुँच गई है, वह क्या मैं समझती नहीं।''[3] स्त्री आज अपने अतीत से कितना ही भाग ले किन्तु एक न एक दिन वह उसके सामने आ ही जाता है। वेश्यावृत्ति से बाहर निकलना स्त्री के लिए आसान नहीं है। स्त्री अपने बच्चों को इस पेशे से दूर ही रखना चाहती है। अंगूरी कहती है– ''मेरी बेटी कभी हमारे पेशे में अपना मुँह काला नहीं करेगी।''[4] स्पष्ट है कि स्त्रियाँ अपने बच्चों को इस राह में नहीं भेजना चाहती जहाँ से निकलने का कोई मार्ग न हो।

शिवानी के उपन्यासों में स्त्री–संघर्ष और स्त्री–जीवन के उन पलों को भी अधिव्यक्ति मिलती है जिसमें समाज मौन रहकर स्त्री को नीचा दिखाने का प्रयास किरता है। 'भैरवी' उपन्यास में रामप्यारी एक रखैल के रूप में अपना जीवन यापन करती है। किन्तु वह अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाकर समाज में प्रतिष्ठित करती है। पुत्र मिलिटरी में अफसर बनता है और पुत्री डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करती है किन्तु समाज उनको कर्मों से न पहचानकर उनके माँ के रखैल रूप से पहचानता है। रामप्यारी की पुत्री डॉ0 विष्ट से कहती है कि– ''मैं विदेश में नौकरी करूँगी और तू वहीं आराम से माला जपना। क्योंकि यहाँ उसके पिछले जीवन के कलुष को क्या कभी स्वदेश का समाज मिटने देगा ?''[5] वास्वत में समाज लोगों को पढ़ाई–लिखाई, नौकरी तो देता है लेकिन वह मान–सम्मान नहीं देता है। रखैल का जीवन खुद अपने चारित्रिक दृष्टि से पाप माना जाता है किन्तु उनके संघर्षों को कोई नहीं देखता है।

विधवा जीवन स्त्री–संघर्ष का सबसे कठिन जीवन है। स्त्री–पति के वियोग में अपना सर्वत्र खो देती है। 'मायापुरी' उपन्यास में तीन–तीन विधवा स्त्रियों के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। माँ अपने विधवा बहुओं से कहती है कि– ''वे चले गए और जिन्हें जाना था वे पिछड़ गई। वैभव का आज भी अन्त नहीं है, पर उस मीलो तक फैली हवेली में प्रेतात्माओं सी वे तीनों अकेली रहती हैं, उनके बुकौ के भीतर ही उनके संसार सीमित है।''[6] 'मायापुरी' विधवा स्त्रियों के जीवन संघर्ष की दारुण गाथा है। वे विधवा होकर भी अपने जीवन में परिवर्तन करने के इच्छुक है। किन्तु पुरुष की ललचाई नजरों ने इन विधवाओं को अपनी काम–पिपासा का शिकार बनाना चाहा तो वे अपने देह को पाप में ढकेलने के स्थान पर मरना उपर्युक्त समझते है। शिवानी स्त्री के वैवध्य जीवन को काफी मार्मिकता और भावुकता के साथ प्रस्तुत किया

है। शिवानी स्त्री के विधवा–जीवन संघर्ष को काफी सहजता और कारुण कथा के रूप में व्यक्त करती है।

'भैरवी' उपन्यास में मिसेज खन्ना बाल विधवा है। जबकि राजेश्वरी अनमेल विवाह के कारण विधवा जीवन व्यतीत कर रही है। किन्तु शिवानी ने इस राजेश्वरी के जीवन में अदम्य साहस भर दिया है– ''राजेश्वरी विधवा होने पर अपने साहस से अपने पैरों पर खड़ी थी। वैधव्य रिपु को उन्होंने पूरी शक्ति लगाकर धकेला था। सम्पूर्ण रूप से पराजित कर दिया था। एम0ए0, एल0टी0 कर वह अब प्रधानाध्यापिका थी।''[7] राजेश्वरी ने विधवा जीवन को अपने संघर्षों का आधार बनाया वह निरीह और दब्बू प्राणी बनने की अपेक्षा नौकरी कर सम्मान से जीने के लिए सदैव संघर्षरत रही।

निष्कर्ष

शिवानी ने अपने उपन्यासों में शिक्षित, सभ्य, उच्चवर्ग और संस्कारी नायिकाओं का चरित्र–चित्रण किया है। नारी जीवन में अनेक समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुये अपने नारी–संघर्ष को प्राथमिकता दी है। जिस प्रकार पुरुषों को आगे बढ़ने का अवसर समाज में मिलता है वैसा अवसर नारी को नहीं मिलता है इसलिए नारी को अपने जीवन को सहज बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। 'सुरंगमा' में लक्ष्मी की माँ पति के अत्याचारों को सहन करते हुये मृत्यु का वरण करती है। लक्ष्मी को पुरुष वर्ग से नफरत है और वह आजीवन कुँआरी रहने का फैसला करती है। 'कालिन्दी' उपन्यास की नायिका कालिंदी नई पीढ़ी की जागरूक और उन्मुक्त विचारों की नारी है जो परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़ते हुये खुद को समाज में स्थापित करती है। 'भैरवी' उपन्यास में राजेश्वरी समाज की दकियानूसी बातों का विरोध करती है। शिवानी के उपन्यासों में स्वाभाविक रूप से समाज और नारी के अन्तर्दृष्टि का चित्रण देखने को मिलता है। नारी का अपमान ही नारी–संघर्ष को जन्म देता है और उसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शिवानी स्मृति अंक, पृ0 71*
2. *शिवानी, किशुनली, पृ0 16*
3. *शिवानी, श्मशान चंपा, पृ0 62*
4. *वही, पृ0 63*
5. *शिवानी, भैरवी, पृ0 26*
6. *शिवानी, मायापुरी, पृ0 84*
7. *शिवानी, भैरवी, पृ0 34*